विश्व विषमता रिपोर्ट

2018

निष्पादन सार

हिन्दी पाठान्तर

समन्वयकर्ता

FACUNDO ALVAREDO
LUCAS CHANCEL
THOMAS PIKETTY
EMMANUEL SAEZ
GABRIEL ZUCMAN

WORLD INEQUALITY LAB

लेखक और समन्वयकर्ता:
Facundo Alvaredo
Lucas Chancel
Thomas Piketty
Emmanuel Saez
Gabriel Zucman

महा समन्वयकर्ता:
Lucas Chancel

रिपोर्ट का शोध दल:
Thomas Blanchet
Richard Clarke
Leo Czajka
Luis Estévez-Bauluz
Amory Gethin
Wouter Leenders

रिपोर्ट में इन द्वारा लिखित नवीन तथा शोध पत्रों पर आग्रह किया गया है:
Facundo Alvaredo
Lydia Assouad
Anthony B. Atkinson
Charlotte Bartels
Thomas Blanchet
Lucas Chancel
Luis Estévez-Bauluz
Juliette Fournier
Bertrand Garbinti
Jonathan Goupille-Lebret
Clara Martinez-Toledano
Salvatore Morelli
Marc Morgan
Delphine Nougayrède
Filip Novokmet
Thomas Piketty
Emmanuel Saez
Li Yang
Gabriel Zucman

डब्ल्यू आई डी सहयोगी:
The report ultimately relies on the data collection, production and harmonization work carried out by more than a hundred WID.world fellows located over five continents and contributing to the World Wealth and Income Database (visit www.wid.world/team for more information). Analyses presented in the report reflect the views of the report's editors and not necessarily those of WID.world fellows.

Creative Commons Licence
4.0 - CC BY-NC-SA 4.0
World Inequality Lab, 2017

अभिकल्पना: Grand Krü, Berlin

आवरण कला रचना इनके एक
छायांकन पर आधारित है
Dimitri Vervitsiotis / Getty Images

विश्व विषमता रिपोर्ट **2018**

निष्पादन सार

I. विश्व विषमता रिपोर्ट 2018 का क्या उद्देश्य है?

विश्व विषमता रिपोर्ट 2018 आय और धन संपदा की विषमता के व्यवस्थित और पारदर्शी मापन में नवीनतम तीक्ष्णधार वाली कार्यविधि का प्रयोग कर रही है। इस रिपोर्ट को विकसित कर वर्ल्ड इन्इक्वालिटी लैब एक लोकतांत्रिक सूचना अभाव को भर कर समाज के विभिन्न कर्ताओं को विषमता पर प्रबुद्ध विमर्श में भागीदारी हेतु आवश्यक तथ्य से सन्नद्ध कर रही है।

▶ विश्व विषमता रिपोर्ट 2018 का ध्येय जन विमर्श हेतु नवीनतम और संपूर्ण जानकारी के आंकड़े उपलब्ध करा कर विश्व भर में आर्थिक विषमता पर चल रहे संवाद को और अधिक सारगर्भित बनाने में योगदान देना है।

▶ आर्थिक विषमता बहुत व्यापक है और किसी सीमा तक अपरिहार्य भी रहती है। किन्तु हमारा विश्वास है कि यदि विषमता में वृद्धि के क्रम पर अच्छी तरह ध्यान देकर उसका समाधान नहीं किया गया तो ये अनेक प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संक्षोभ का कारण बन सकती है।

▶ हमारा यह ध्येय नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति को विषमता के बारे में एक बात पर सहमत बना लिया जाए, यह तो कभी नहीं हो पाएगा। इसका कारण यही है कि विषमता के किसी आदर्श स्तर का निरूपण कर सकने वाले किसी एकमेव वैज्ञानिक सत्य का अस्तित्व ही नहीं है। उस आदर्श स्तर की प्राप्ति के लिए वांछनीय सामाजिक नीतियों और संस्थानों के सम्मिश्र की रचना पर सहमति तो बहुत दूर की बात होगी। अन्ततः इस विषय में कठिन निर्णय कर पाना तो लोक विचार विमर्श और राजनीतिक संस्थाओं तथा उनकी अपनी प्रक्रियाओं का ही दायित्व होता है। किन्तु इस विचार मंथन के लिए भी आय और धन संपदा के विषय में अधिक सटीक एवं पारदर्शितापूर्ण जानकारी का होना अनिवार्य है।

▶ नागरिकों को इस प्रकार के निर्णय लेने में सक्षम बनाने के लिए हम राष्ट्रीयकरण और निजीकरण की नीतियों, पूंजी समेकन और सार्वजनिक के वृद्धिक्रम जैसे समष्टि आर्थिक घटनाक्रमों का वैयक्तिक अर्जन और सरकारी अन्तरणों, निजी संपदा और ऋण जैसी विषमता केंद्रित व्यष्टि अर्थशास्त्रीय प्रवृत्तियों के बीच संबंध का निरूपण भी करना चाहते हैं।

▶ अनेक देश तो विस्तृत एवं संगतिपूर्ण आय और धन संपदा की विषमता के आंकड़ें भी सार्वजनिक नहीं कर पा रहे। अतः समष्टि एवं व्यष्टि आर्थिक स्तरीय विषमता के आंकड़ों के बीच समंजन स्थापित कर पाना इतना सरल कार्य नहीं होगा। विषमता के मानक मापक तो परिवार स्तरीय सर्वेक्षणों पर भरोसा करते हैं और इनमें सदैव ही सामाजिक अनुक्रम के शीर्ष पर विद्यमान व्यक्तियों की आय और धनसंपदा का न्यूनांकन होता आ रहा है।

▶ वर्तमान त्रुटियों का निवारण करने के लिए हम एक ऐसी नवीन प्रवर्तनकारी कार्यविधि का प्रयोग करने जा रहे हैं जो एक सुव्यवस्थित और पारदर्शी रुप में हमें उपलब्ध सभी स्रोतों की जानकारी को समग्ररुप से संकलित कर लेती है। ये स्रोत हैं: राष्ट्रीय आय और धन संपदा लेखा (जहां तक संभव हो, विदेश स्थित संपदा के अनुमान सहित), पारिवारिक आय एवं संपदा सर्वेक्षण, आय पर लगे करों के राजकोषीय आंकड़े, उत्तराधिकार और धन संपदा के आंकड़ें (जहां भी उपलब्ध हो); और धन संपदा संपन्नता के अनुक्रम।

▶ इस रिपोर्ट में प्रस्तुत की जा रही सारिणी-श्रृंखलाएं एक सौ से अधिक शोधकर्ताओं के सामूहिक प्रयासों पर आधारित हैं। ये शोधकर्ता सभी महाद्वीपों पर कार्यरत् हैं और WID.world के आंकड़ा सार में निरंतर योगदान कर रहे हैं। सभी आंकड़ें wir2018.wid.world पर ऑन-लाइन उपलब्ध है और उनकी पूर्णरुप से अनुकृति की जा सकती है। इससे कोई भी व्यक्ति स्वयं विश्लेषण कर विषमता के विषय में अपना मत निर्धारित कर पाने में समर्थ हो सकता है।

II. विश्व आय विषमता के विषय में हमारे नवीन निष्कर्ष क्या हैं?

हम दिखाने जा रहे हैं कि विश्व के सभी क्षेत्रों में पिछले दशकों में विषमता में वृद्धि हुई है, किन्तु इस वृद्धि की दरें अलग-अलग रही है। समान प्रायः विकास स्तरों पर अवस्थित देशों में विषमता के स्तरों में इतने विशाल अन्तरों की उपस्थिति का तथ्य इसी बात की ओर इंगित करता है कि देश की अपनी राष्ट्रीय नीतियां और संस्थाएं विषमता की रुप रचना में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रही है।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में आय की विषमताओं में बहुत अन्तर पाए गए हैं। इनका स्तर यूरोप में निम्नतम और मध्य पूर्व के क्षेत्र में अधिकतम पाया गया है।

▶ विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विषमताओं में बहुत अन्तर है। वर्ष 2016 में ही यदि राष्ट्रीय आय में विभिन्न देशों में उनके अपने-अपने शीर्ष 10% आय अर्जक वर्ग के अंशों पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि ये अंश यूरोप में 37%, चीन में 41%, रुस में 46%, स. रा. अमेरिका-कनाडा में 47% तथा सहरेतर अफ्रीका, ब्राजील और भारत में 55% के लगभग था। हमारे अनुमान के अनुसार मध्यपूर्व का क्षेत्र विश्व का गहनतम विषमताग्रस्त क्षेत्र है। यहां शीर्ष 10% वर्ग राष्ट्रीय आय के 61% को हस्तगत कर रहा है। (**रेखाचित्र E1**)

पिछले दशकों के प्रायः सभी देशों में आय की विषमता में वृद्धि हुई है, किन्तु इसकी वृद्धि दरों में अन्तर रहे हैं। इसी से सुझाव मिल रहा कि विषमता की रुप-रचना के निर्माण में संस्थाओं और नीतियों का महत्त्व होता है।

▶ वर्ष 1980 के बाद से आय की विषमता में उत्तरी अमेरिका, चीन, भारत और रुस में तीखी वृद्धि हुई है। यूरोप में यह वृद्धि मध्यम रही है (**रेखाचित्र E2A**)। बृहतर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यह वृद्धि उस महायुद्धोपरांत समताशील व्यवस्था तंत्र के अंत को दर्शा रही है जो विभिन्न देशों/क्षेत्रों में अपने-अपने विलक्षण रुप में दिखाई दे रहा था।

रेखाचित्र E1

शीर्ष 10% के आय अंश-विश्व स्तर पर, 2016

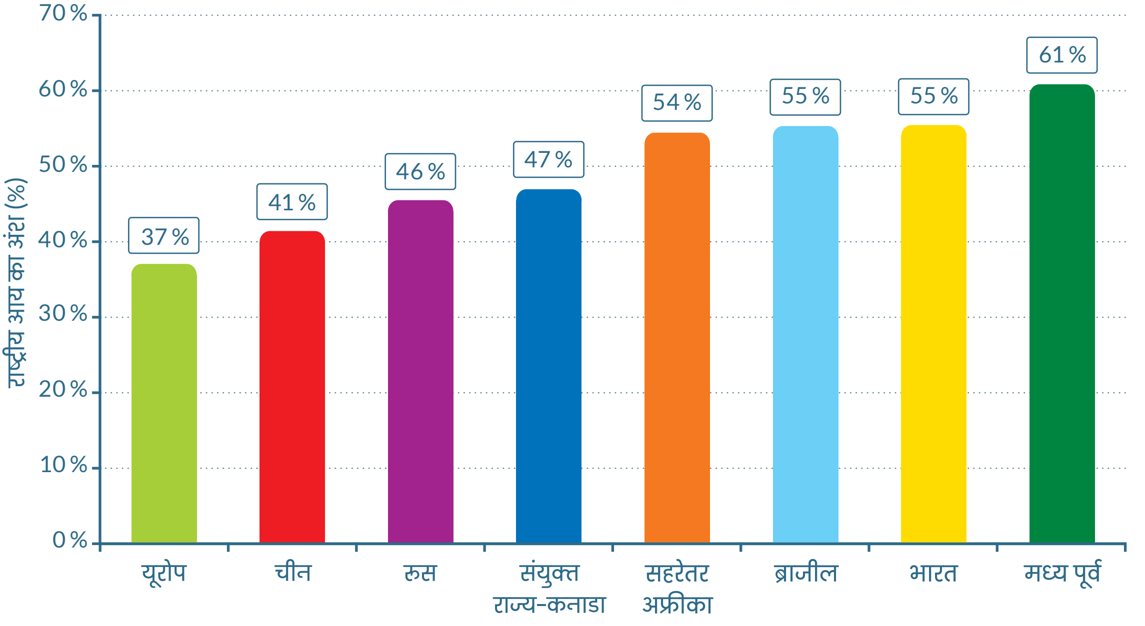

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

वर्ष 2016 में यूरोप में राष्ट्रीय आय का 37% शीर्ष 10% को प्राप्त हुआ था जबकि मध्यपूर्व में उन्हें 61% मिल रहा था

रेखाचित्र E2A

विश्व में शीर्ष 10% के आय अंश 1980–2016:
प्रायः हर कहीं विषमता वृद्धि-किन्तु अलग-अलग दरो पर।

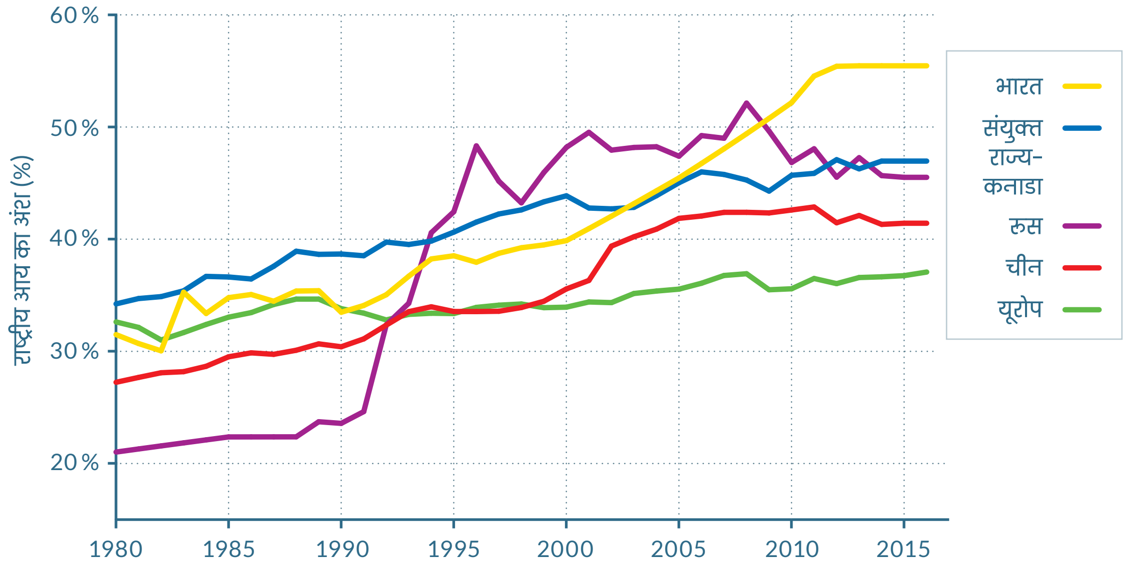

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

वर्ष 2016 में संयुक्त राज्य और कनाडा में राष्ट्रीय आय का 47% शीर्ष 10% को प्राप्त हुआ था जबकि 1980 इनका अंश 34% था

▶ इस सामान्य परिदृश्य के अपवाद भी है। मध्यपूर्व, सहरेतर अफ्रीका और ब्राजील में आय की विषमता स्थिर प्रायः रही है, किन्तु अत्यंत ही उच्च स्तर पर (**रेखाचित्र E2B**)। महायुद्धोपरांत की समताशील लहर से अपरिचित रहे ये क्षेत्र विश्व भर के लिए "विषमता की सीमाओं" की रचना कर रहे हैं।

▶ विभिन्न देशों में 1980 के बाद से दिखाई पड़ी अलग-अलग प्रवृत्तियों से पता चल रहा है कि आय की विषमता की गत्यात्मकता अनेक राष्ट्रीय संस्थागत और राजनीतिक पृष्ठभूमियों द्वारा रची जाती है।

▶ यह बात भूतपूर्व साम्यवादी या अतिनियमनाधीन देशों चीन, भारत और रुस आदि में दिखाई दे रहे अलग-अलग विस्तार पथों के अवलोकन से बहुत ही स्पष्ट हो जाती है (**रेखाचित्र E2A और B**)। रुस में तो विषमता का उभार बहुत ही विस्फोटक रहा है तो चीन में मध्यम और भारत में अपेक्षाकृत मंथर गति से इनमें वृद्धि दिखाई दी है। इन सबमें इन देशों में पिछले दशकों में अपनाई गई वि-नियमन और व्यापार निर्बंधन की अलग-अलग प्रकार की नीतियों की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही हैं।

▶ पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राजय के बीच विषमता स्तरों की अपसृति तो बहुत ही तीखी रही है। 1980 में तो इनके विषमता स्तर समानप्रायः ही थे, किन्तु आज ये बहुत ही अलग दिखाई पड़ रहे हैं। वर्ष 1980 में दोनों में ही शीर्ष 1% का अंश 10% था। यह 2016 आते-आते पश्चिमी यूरोप में कुछ वर्धित होकर 12% तक पहुंच गया। किन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका में तो यह 20% स्तर को छू गया है। इसी समय संयुक्त राज्य में निम्नतम 50% वर्ग का आय अंश 1980 के 20% से अधिक स्तर से गिरकर 2016 में 13% रह गया है (**रेखाचित्र E3**)।

▶ संयुक्त राज्य में दिखाई पड़ रहा यह आय की विषमता का संवृद्धि पथ मुख्यतः वहां की शैक्षणिक विषमता के साथ-साथ उस कर प्रणाली का परिणाम है जो शीर्ष स्तर पर श्रम की आय में 1980 के दशक और शीर्ष पूंजी आय में 2000 के बाद से आए उछाल के बावजूद अपनी प्रगतिशीलता खो रही है। महाद्वीपीय यूरोप में यह कर प्रगतिशीलता का ह्रास अपेक्षाकृत धीमा रहा है, जबकि मजदूरी की विषमता को शैक्षणिक और मजदूरी निर्धारण नीतियों ने भी कुछ कुंठित किया है। ये नीतियां दोनों ही क्षेत्रों में निम्न और मध्यम आय वर्गों के पक्ष में रही है, साथ ही पुरुषों और स्त्रियों के बीच आय की विषमता में कमी तो आई है किन्तु शीर्ष स्तर पर अभी भी इनका अन्तर बहुत विशाल दिखाई दे रहा है।

रेखाचित्र E2B

विश्व भर में शीर्ष 10% वर्ग के आय अंश; 1980-2016: क्या विश्व विषमता उच्च सीमा की ओर अग्रसर है?

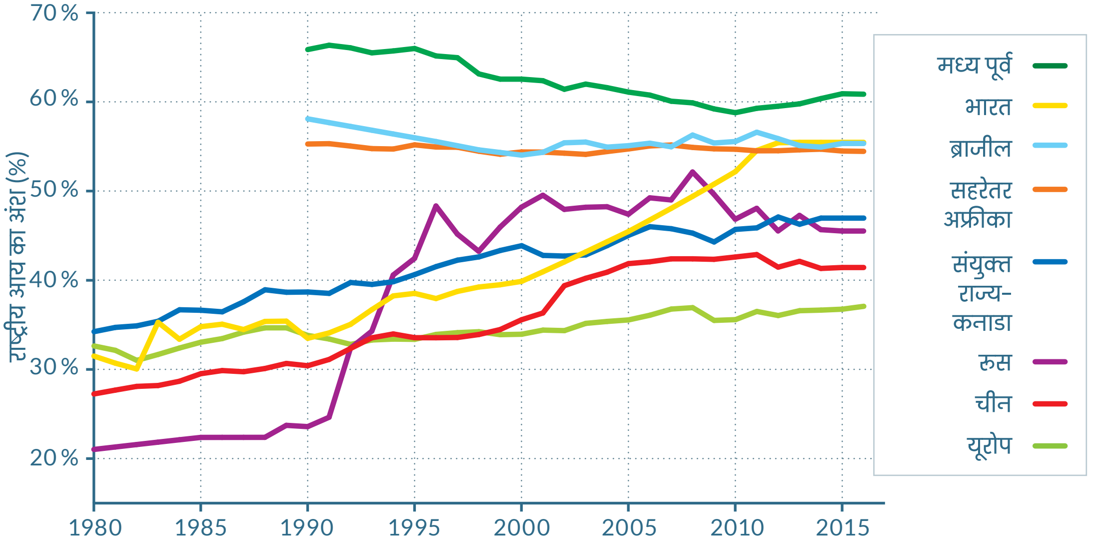

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

वर्ष 2016 में भारत में राष्ट्रीय आय का 55% शीर्ष 10% को प्राप्त हुआ जबकि 1980 में यह अंश 31% था

वैश्विक नागरिकों के बीच पिछले दशकों में विषमता का विकास क्रम किस प्रकार चला है? हम 1980 के बाद से विश्व आय की संवृद्धि के समग्र वैश्विक जन समुदाय के बीच विभाजन-वितरण के स्वरूप के प्रथम अनुमान प्रदान कर रहे हैं। विश्व स्तर पर शीर्ष 1% से निम्न 50% वर्ग की तुलना में इस संवृद्धि का दुगुना भाग हस्तगत किया है। फिर भी निम्न 50% वर्ग को संवृद्धि की महत्वपूर्ण दरों का लाभ अवश्य प्राप्त हुआ है। किन्तु वैश्विक मध्यम वर्ग (जो यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राज्य में न्यूनतम 90% आय वर्ग के समान है) को ही इस अवधि में आय में सापेक्ष गिरावट का अनुभव करना पड़ा है।

वैश्विक स्तर पर 1980 के बाद चीन की तीव्र आर्थिक संवृद्धि के बावजूद विषमता में तीखी वृद्धि हुई है।

► एशिया (विशेषकर चीन और भारत) में उच्च संवृद्धि के फलस्वरूप विश्व जन समुदाय के नवीनतम 50% वर्ग ने अपनी आय में महत्वपूर्ण वृद्धि के दर्शन किए हैं। किन्तु देशों में आंतरिक रुप में विषमता वृद्धि के कारण 1980 के बाद से हुई आय वृद्धि में न्यूनतम 50% वर्ग से दुगुना अंश शीर्ष 1%, अर्थात धनिकतम वर्ग ने हथिया लिया है (**रेखाचित्र E4**)। वैश्विक न्यूनतम 50% से ऊपर और शीर्ष 1% के बीच वाले वर्ग के व्यक्तियों की आय वृद्धि भी धीमी हो रही है। इसमें उत्तरी अमेरिका और यूरोप के सभी निम्न और मध्यम आय वर्ग सम्मिलित है।

► वैश्विक विषमता में वृद्धि किसी स्थिर दर पर नहीं हुई है। वैश्विक शीर्ष 1% का आय अंश 1980 में 16% से बढ़कर 2000 में 22% हो गया था, किन्तु उसके बाद कुछ कम होकर यह 20% पर आ गया है। वैश्विक निम्नतम 50% वर्ग का आय अंश 1980 से ही 9% के आसपास मंडराता रहा है (**रेखाचित्र E5**)। वर्ष 2000 के बाद प्रवृत्ति में बदलाव का कारण विभिन्न देशों के बीच औसत आय की विषमता में आई कमी है जबकि सभी देशों में आंतरिक विषमता में वृद्धि का क्रम निरंतर जारी है।

रेखाचित्र E3

शीर्ष 1% बनाम निम्नतम 50% के आय अंश, सं. राज्य और पश्चिमी यूरोप, 1980–2016: आय विषमता के पथों की अपसृति

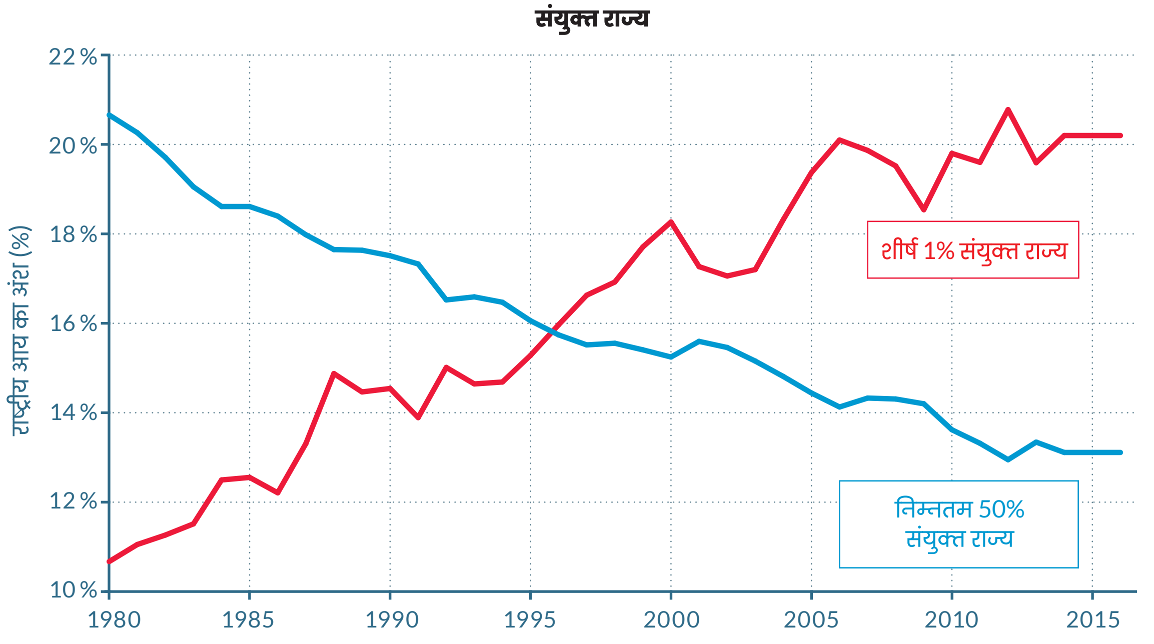

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

वर्ष 2016 में पश्चिमी यूरोप में राष्ट्रीय आय का 12% शीर्ष 1% को मिला था जबकि संयुक्त राज्य में इनका अंश अंश 20% था पश्चिम यूरोप में 1980 में शीर्ष 1% समूह राष्ट्रीय आय का 10% कमा रहा था, जबकि संयुक्त राज्य में इस समूह का अंश 11% था।

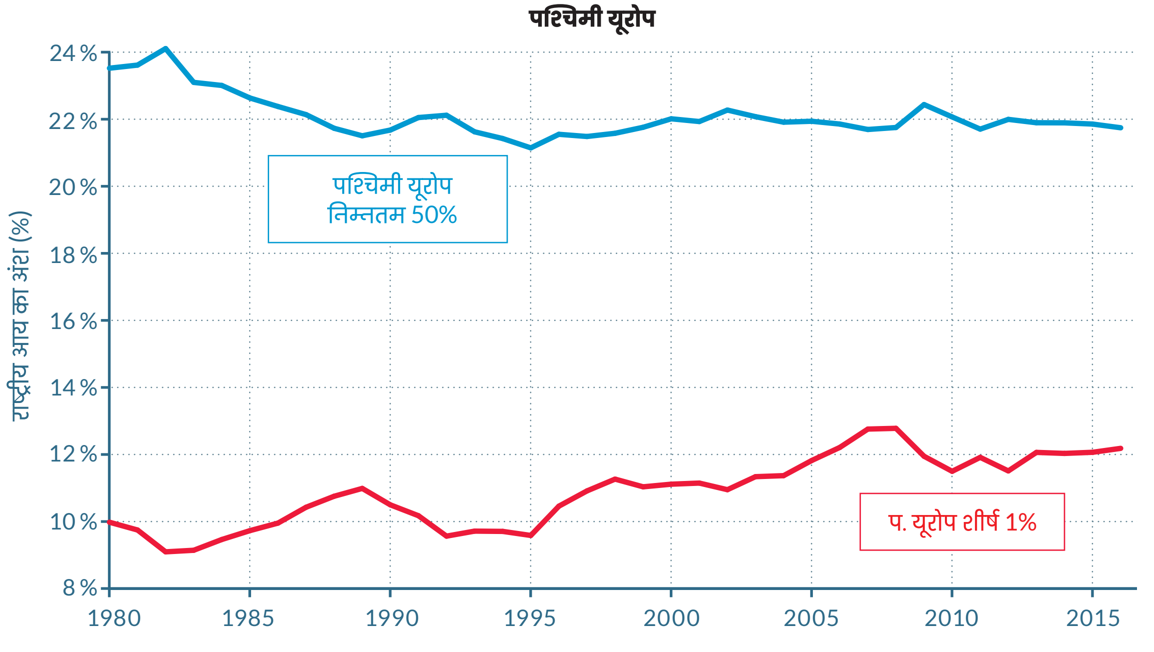

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

A paragraph went missing here, as far as I can overview. Thanks for your help!

रेखाचित्र E4

वैश्विक विषमता और संवृद्धि, 1980–2016 का एक हस्ति चित्रांकन

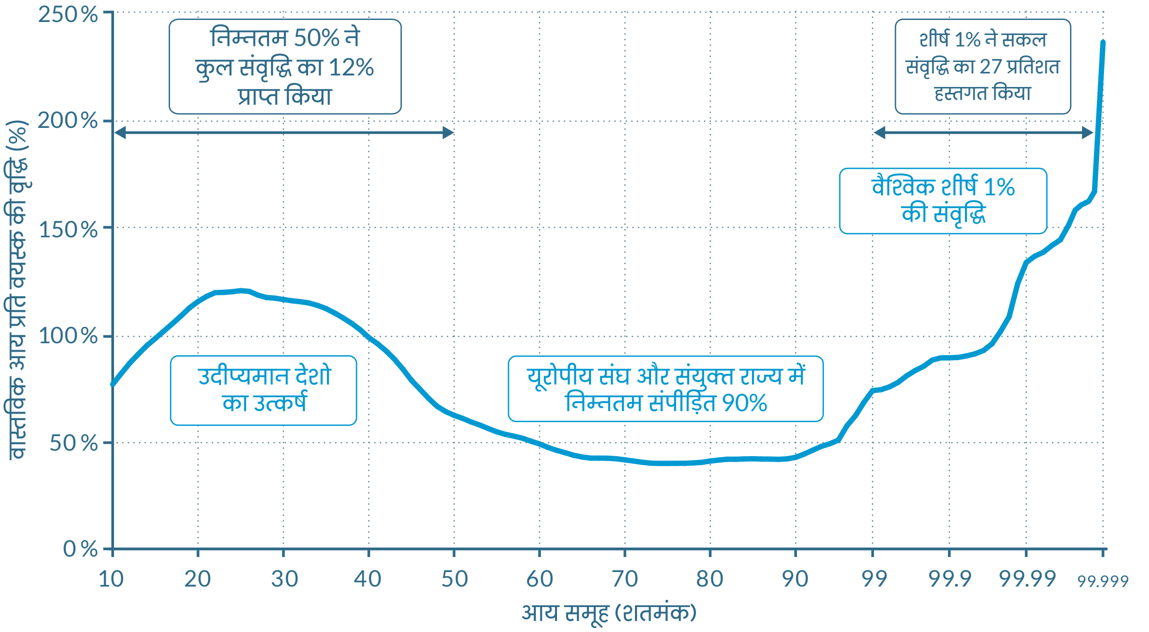

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

क्षैतिज अक्ष पर विश्व जनसंख्या को समान आकार के 100 समूहों में विभाजित कर उन्हें बायें से दाहिनी ओर वृद्धिमान क्रम में सजाया गया है। यह वृद्धि समूह के आय के स्तर की है। शीर्ष 1% समूह को भी आगे 10 उपसमूहों में बांटा गया है और उनमें भी सबसे धनी को 10 में बांटा गया है तथा इस समूह के शीर्ष उपसमूह को आगे फिर 10 में बांटा दिया गया है। उर्द्ध्व अक्ष प्रत्येक समूह के व्यक्तियों की कुल आय में 1980 से 2016 के बीच वृद्धि दिखा रहा है। सतमंक समूह p99p99.1 (वैश्विक धनिकतम 1% में से गरीबतम 10%) के लिए 1980 से 2016 के बीच 74% प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि शीर्ष 1% ने इस अवधि में हुई सकल वृद्धि का 27% हस्तगत कर लिया।

रेखाचित्र E5

वैश्विक शीर्ष 1% की 'उन्नति' बनाम निम्नतम 50% की यथास्थिति 1980–2016

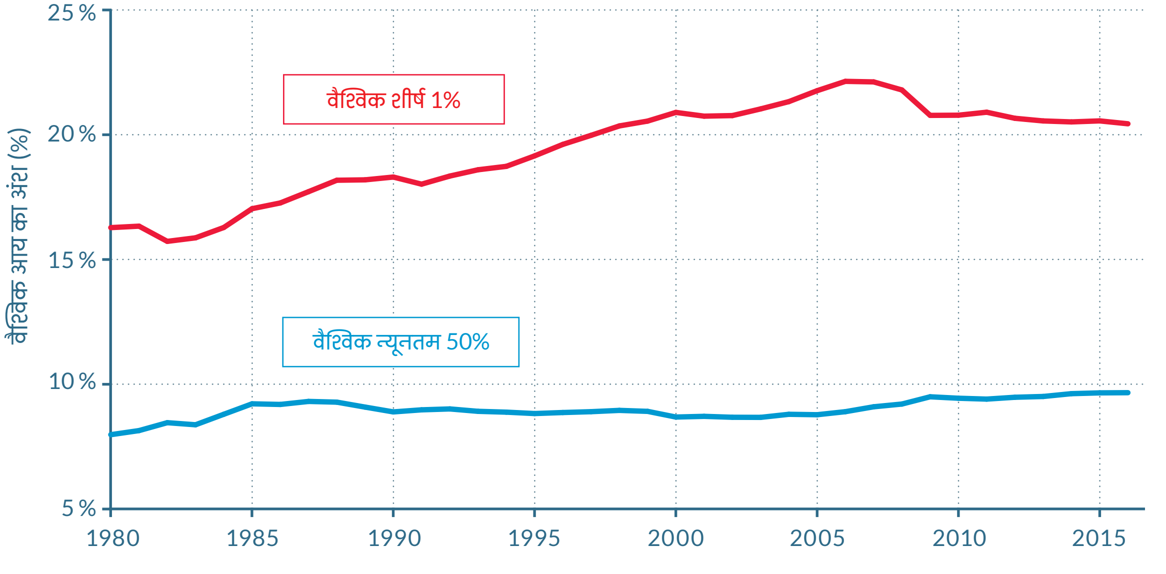

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

वर्ष 2016 में विश्व आय का 22 प्रतिशत अंश शीर्ष 1% को मिला था जबकि निम्नतम 50% का हिस्सा मात्र 10 प्रतिशत था। वर्ष 1980 में इनके अंश क्रमशः 16% और 8% ही थे।

III. निजी और सार्वजनिक पूंजी के विकासक्रम विषमता हेतु महत्वपूर्ण क्यों रहते हैं?

आर्थिक विषमता मुख्यतः पूंजी के स्वामित्व में गैर बराबरी द्वारा ही परिचालित होती है और पूंजी पर स्वामित्व निजी व्यक्तियों का हो सकता है या फिर 'सार्वजनिक' अधिकारियों/संस्थानों का। हम दिखाने जा रहे हैं कि 1980 के बाद से लगभग सभी देशों में सार्वजनिक संपदाओं का निजी हाथों में अंतरण हुआ है, वे देश अमीर रहे हों या उदीप्यमान। इसीलिए राष्ट्रीय धनसंपदा में तो वृद्धि दिखाई दे रही है किन्तु, धनी देशों में सार्वजनिक धनसंपदा शून्य (या ऋणात्मक भी) हो चुकी है। इस कारण से सरकारों की विषमता का सामना कर पाने की क्षमताएं भी आहत हो सकती है; इस घटनाक्रम का व्यक्तियों के बीच विषमता के लिए तो एक गंभीर निहितार्थ होगा।

पिछले दशकों में देश तो समृद्ध हुए हैं किन्तु उनकी सरकारें विपन्न होकर रह गई हैं।

- निवल निजी संपदा का निवल राष्ट्रीय आय से अनुपात देश की समग्र धन संपदा पर व्यक्तियों के नियंत्रण के विषय में एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, विशेषकर जब इसकी तुलना सरकार धारित सार्वजनिक संपदा के इसी

रेखाचित्र E6

धनी देशों में निजी पूंजी का उत्कर्ष और सार्वजनिक पूंजी का अपकर्ष 1970–2016

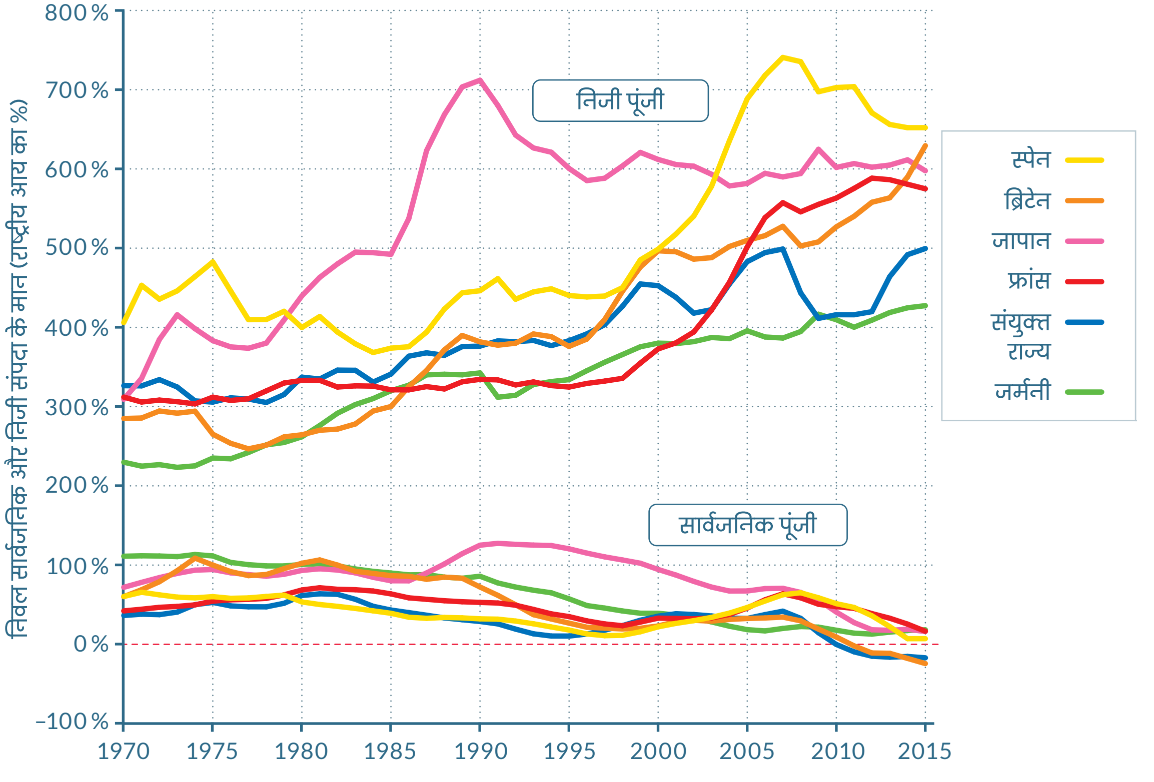

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

वर्ष 2015 में सार्वजनिक पूंजी का निवल मान ऋणात्मक (निवल राष्ट्रीय आय का -17%) रहा, जबकि निवल निजी संपदा का मान राष्ट्रीय आय का 500% था। वर्ष 1970 में निवल सार्वजनिक संपदा राष्ट्रीय आय का 36% थी और निवल निजी संपदा 326%। निवल निजी संपदा निजी परिसंपदाओं में से निजी ऋण घटाकर प्राप्त होती है। इसी प्रकार निवल सार्वजनिक संपदा का मान सार्वजनिक परिसंपदाओं में से सार्वजनिक ऋण घटाने पर मिलता है।

अनुपात से की जाए। हम यह तो जानते ही हैं कि निजी और सार्वजनिक धन संपदा का योग ही राष्ट्रीय धन संपदा का मान होता है। अतः निजी और सार्वजनिक धन संपदा के बीच एक संतुलन विषमता के स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक बन जाता है।

▶ पिछले कुछ दशकों में निवल निजी धन संपदा में व्यापक रुप से वृद्धि हुई। धनी देशों में इसका राष्ट्रीय आय से अनुपात 1970 में राष्ट्रीय आय के 200–350% तक था तो अब यह 400–700% हो चुका है। यह 2008 के वित्तीय संकट से भी प्रायः अप्रभावित ही रहा है। जापान और स्पेन के संपदा कीमत बुलबुलों के फूटने का भी इस वृद्धि पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं दिखा (**रेखाचित्र E6**)। चीन और रुस में तो निजी धन संपदा में असामान्य रुप से भारी वृद्धि हुई है। साम्यवादी से पूंजीवादी रुझान वाली अर्थव्यवस्थाएं बनने के क्रम में इन देशों में ये अनुपात क्रमशः 4 और 3 गुना हो गया है। इन देशों के निजी संपदा-आय अनुपात फ्रांस, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य के स्तरों को छू रहे हैं।

▶ दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार भी रख सकते है: वर्ष 1980 के बाद से प्रायः सभी देशों में निवल सार्वजनिक परिसंपदाओं (सार्वजनिक परिसंपदा घटा सार्वजनिक ऋण) में ह्रास हुआ है। चीन और रुप में तो सार्वजनिक परिसंपदाएं राष्ट्रीय धन संपदा के 60–70% से कम होकर 20–30% ही रह गई। संयुक्त राजय तथा ब्रिटेन में तो पिछले कुछ वर्षों में यह निवल सार्वजनिक परिसंपदा का मान ऋणात्मक हो चला है, जापान, जर्मनी और फ्रांस में इसका मान मामूली सा धनात्मक दिखाई दे रहा है (**रेखाचित्र E7**)। कहा जा रहा है कि इसके कारण सरकार की अर्थव्यवस्था का नियमन, आय का पुनः वितरण और वृद्धिमान विषमता का निवारण कर पाने की क्षमता कुंठित हो रही है। इस सार्वजनिक संपदा ह्रास की सामान्य प्रवृत्ति के एकमात्र अपवाद नॉर्वे जैसे तैल-समृद्ध देश है जहां विशाल सार्वभौम धनकोष विद्यमान हैं।

रेखाचित्र E7

सार्वजनिक पूंजी का ह्रास; 1970-2016

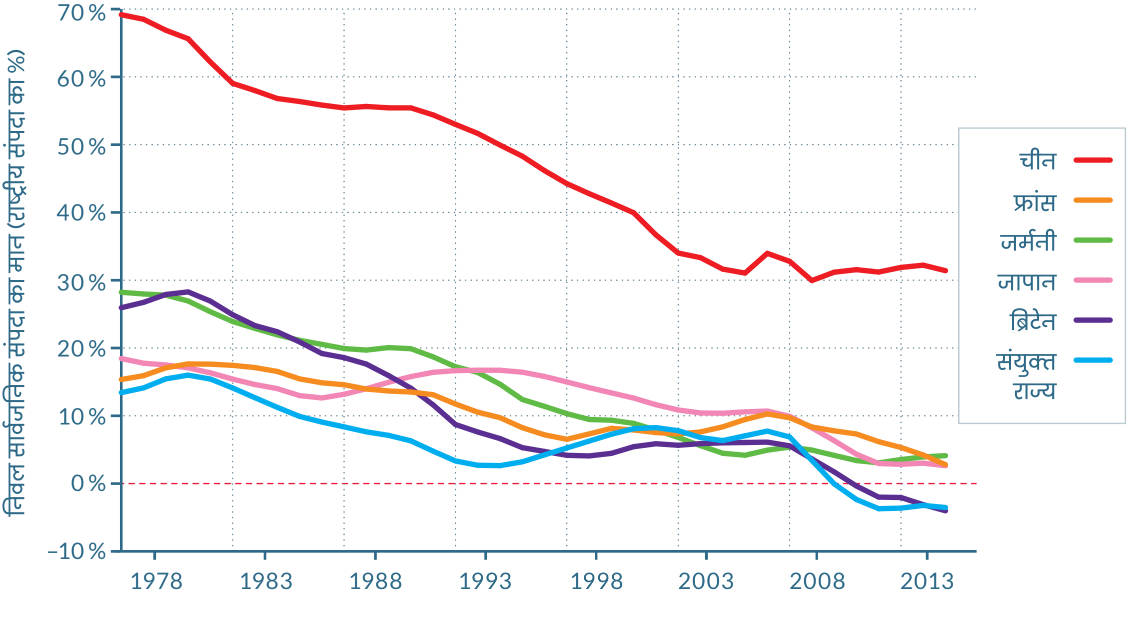

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

फ्रांस में 2015 में सार्वजनिक संपदा का राष्ट्रीय संपदा में अंश 3% रह गया, जबकि 1980 में यह 17% था।

IV. विश्व धनसंपदा विषमता पर हमारे नवीन निष्कर्ष क्या हैं?

विभिन्न देशों में बड़े स्तर पर निजीकरण और आय की विषमता में वृद्धि ने मिलकर उनके नागरिकों के बीच व्यक्ति स्तर पर धन संपदा की विषमता की वृद्धि को और बढ़ावा दिया है। रुस और संयुक्त राज्य में तो धन संपदा की विषमता पराकाष्ठा को छू रही है, जबकि यूरोप में यह अभी भी काफी मध्यम स्तर पर ही है। हां, इतना अवश्य है कि धनी देशों में यह धनसंपदा विषमता 20वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों के अत्यंत उच्च स्तर तक तो नहीं पहुँच पाई है।

व्यक्तियों के बीच धन संपदा विषमता की वृद्धि दर 1980 से विभिन्न देशों में अलग-अलग ही रही है।

▶ आय विषमता में वृद्धि और पिछले 40 वर्षों में सार्वजनिक संपदाओं के बड़े स्तर पर निजी व्यक्तियों के अंतरण ने मिलकर व्यक्तियों के बीच धनसंपदा की विषमता में निरंतर वृद्धि का क्रम प्रारंभ कर दिया है। फिर भी संपदा विषमता अभी यूरोप और संयुक्त राज्य में 20 वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों वाले उच्च स्तर तक तो नहीं पहुँची है।

▶ फिर भी संयुक्त राज्य में संपदा विषमता में वृद्धि बहुत विशाल रही है। यहां शीर्ष 1% का अंश 1980 के 22% से बढ़कर 2014 में 39% हो चुका है। इस वृद्धि का मुख्य कारण तो शीर्ष 0.1% संपदाधारियों की संपदा में आया भारी उछाल रहा है। फ्रांस और ब्रिटेन में शीर्ष संपदा अंशों में वृद्धि की दर अपेक्षाकृत धीमी रही है। इसके दो मुख्य कारण रहे- मध्यम वर्ग की गृह संपदाओं के वृद्धिमान क्रम और आय विषमता वृद्धि दर का संयुक्त राज्य की अपेक्षा धीमा होना (**रेखाचित्र E8**)।

▶ चीन और रुस में भी उनके साम्यवादी से अधिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में रुपांतरण के बाद से शीर्ष धन संपदा अंशों में बड़ी वृद्धियां दिखाई दी हैं। चीन और रुस दोनों में ही 1995 से 2015 की अवधि में शीर्ष 1% के धन संपदा अंश दो गुने हो चुके हैं। ये 1995 में क्रमशः 15% और 22% थे और 2015 में 30% एवं 45% हो चुके हैं।

रेखाचित्र E8

विश्व स्तर पर शीर्ष 1% के धन संपदा अंश, 1913–2015: निजी संपदा विषमता की गिरावट और उत्थान

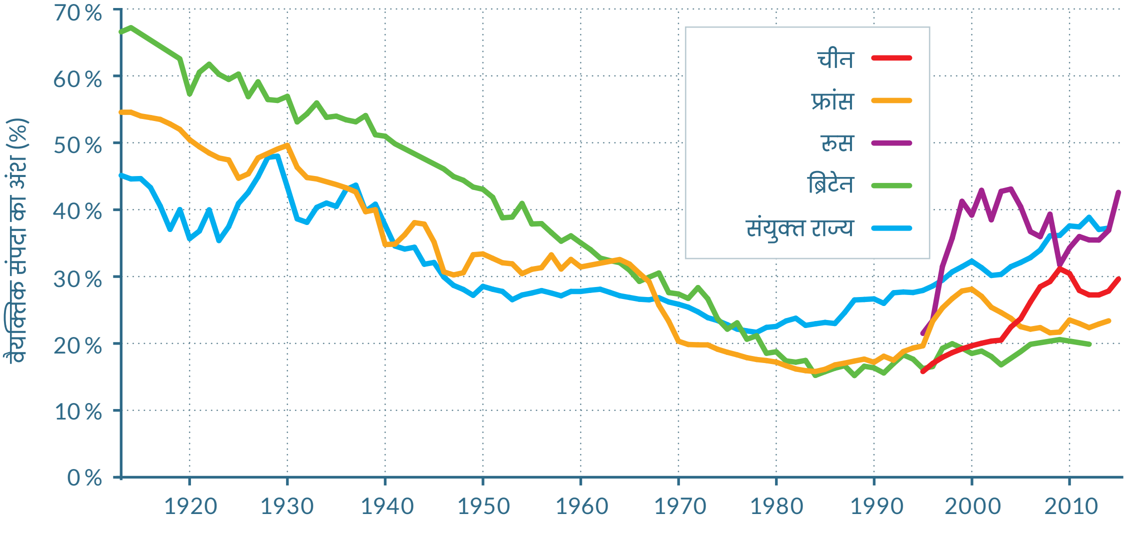

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

रुस में 2015 में शीर्ष 1% का संपदा अंश 43% था, जबकि यह 1995 में 22% ही था।

V. वैश्विक विषमता का भविष्य क्या है और इसका निराकरण कैसे होना चाहिए?

हमने 2050 तक धन संपदा विषमता के विभिनन परिदृश्यों का पूर्वाकलन किया है। यदि विश्व अपनी अभी तक की चाल-ढाल पर ही चलता रहा तो निश्चय ही वैश्विक विषमताएं और अधिक गहन होंगी। दूसरी ओर यदि आगामी दशकों में विश्व ने यूरोप के अपेक्षाकृत उस मध्यम विषमता पथ को अपना लिया (जिसपर यूरोप पिछले कुछ दशकों से चल रहा है) तो वैश्विक आय विषमता में कुछ कमी संभव है। यह वैश्विक गरीबी निवारण के पथ पर भी विशाल स्तर पर प्रगति के दर्शन करा सकता है।

यदि यही चालढाल रही तो वैश्विक संपदा मध्यम वर्ग को और दबाव झेलना पड़ेगा

▶ देशों में आन्तरिक संपदा विषमता की वृद्धि ने विश्व स्तर पर संपदा विषमता की वृद्धि को बढ़ावा दिया है। यदि हम ये मानलें कि चीन, यूरोप और संयुक्त राज्य का सांझा अनुभव विश्व भर के रुझान को भी दर्शाता है तो हम पाते हैं कि 1980 से 2016 के बीच विश्व के धनिकतम 1% का संपदा अंश 28% से 33% के बीच तथा निम्नतम 75% वर्ग का अंश 10% के आसपास मंडराता रहा है।

▶ यदि धन संपदा विषमता वृद्धि का अभी तक चला क्रम आगे भी जारी रहा तो वर्ष 2050 तक चीन, यूरोपीय महासंघ और संयुक्त राज्य के सम्मिलित विश्व में शीर्ष 0.1% संपदा स्वामी विश्व के मध्यम वर्ग जितनी ही संपदा पर अधिकार कर चुके होंगे (**रेखाचित्र E9**)।

उदीप्यमान अर्थव्यवस्थाओं में संवृद्धि की आशावान मान्यताओं के बावजूद वैश्विक आय विषमता में वर्तमान प्रवृत्तियों के जारी रहने पर वृद्धि ही होगी। लेकिन ऐसा ही होना अपरिहार्य नहीं है।

रेखाचित्र E9

निचोड़ा हुआ वैश्विक मध्यम संपदा वर्ग, 1980–2050

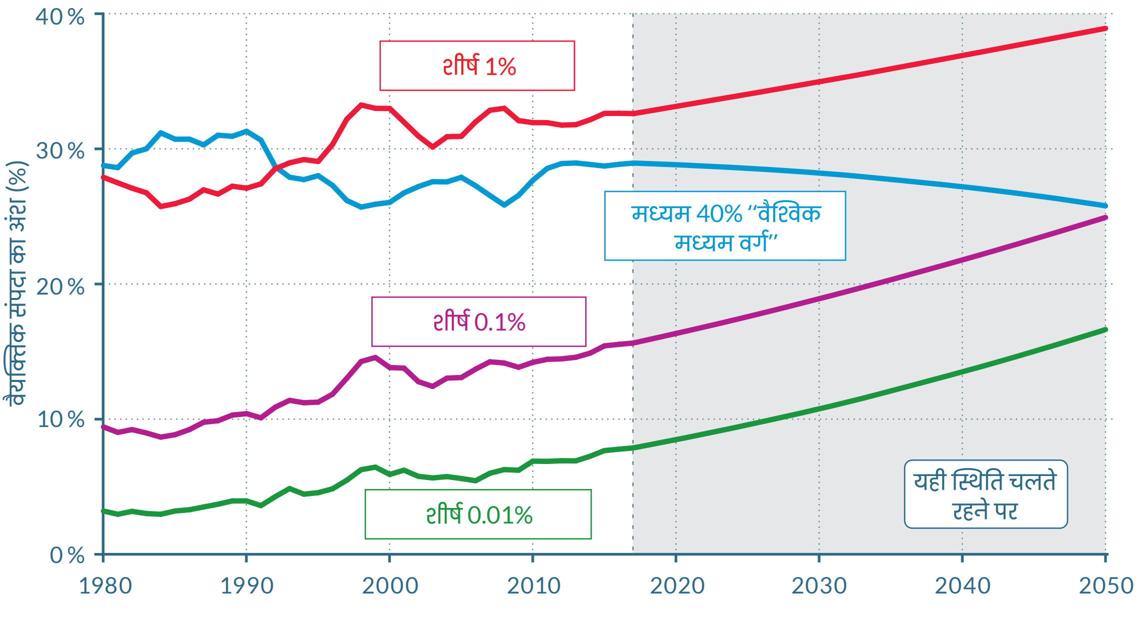

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

चीन, यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य के सम्मिलित विश्व में 2016 में शीर्ष 1% का धन संपदा के 33% प्रतिशत पर अधिकार था। यदि यही हाल चलता रहा तो वर्ष 2050 तक इस समूह का अंश 39% हो जाएगा, जबकि शीर्ष 0.1% संपदा स्वामी लगभग (26%) उतने ही धन पर अधिकार किए होंगे जितना इन देशों के सारे मध्यम वर्ग (27%) के पास होगा। 1987 से 2017 के बीच वैश्विक संपदा समूहों का विकासक्रम चीन, यूरोप और संयुक्त राज्य के संम्मिलित आंकड़ों द्वारा दर्शाया गया है। इन आंकड़ों में स्फीति का ध्यान रखा गया है।

रेखाचित्र E10

वैश्विक विषमता में भविष्य में वृद्धि अपरिहार्य नहीं है।

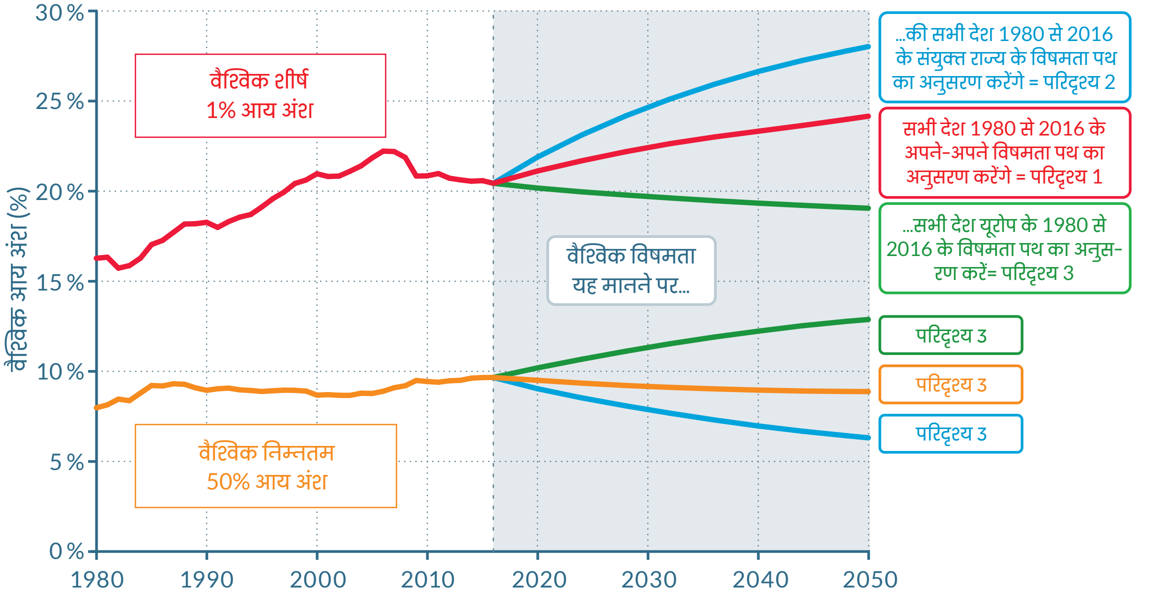

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

यदि सभी देशों ने 2017 से 2050 तक उसी विषमता पथ का अनुगमन किया जिसपर 1980 से 2016 तक संयुक्त राज्य चला है तो विश्व में शीर्ष 1% का आय अंश 2050 तक 28% हो जाएगा। आय के अंशों का अनुमान क्रय समता तुल्य यूरो में लगाया गया है। यह क्रय समता तुल्य का विभिन्न देशों के बीच निर्वाह की लागत के अंतरों का समंजन कर देती है। ये मान स्फीति से निवल है।

▶ यदि देशों ने 1980 से चल रहे आय विषमता मार्ग का ही अनुसरण किया तो वैश्विक आय विषमता में वृद्धि ही होगी। यह उस दशा में भी होगा जबकि अगले तीन दशकों में अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया में उच्च दर पर आय की संवृद्धि की मान्यता सत्य हो जाए। यदि अन्य सभी देश 1980–2016 के बीच संयुक्त राज्य में अपनाए गए उच्च विषमता पथ का अनुगमन करने लगे तो वैश्विक आय विषमता में और अधिक वृद्धि हो जाएगी। यदि सभी देशों ने यूरोप के अपेक्षाकृत मध्यम विषमता पथ (1980 से अभी तक) को अपनाया तो वैश्विक विषमता में कुछ कमी हो सकती है (**रेखाचित्र E10**)।

▶ देश के भीतर विषमता की गत्यात्मकता का वैश्विक गरीबी निवारण की गत्यात्मक पर अति गहन प्रभाव होता है। विभिन्न देशों द्वारा अपनाए गए विषमता पथ के आधार पर विश्व के निम्न आय अद्र्धांश की आय के स्तर में 2050 तक दुगुने तक वृद्धि हो सकती है (**रेखाचित्र E11**)। यह €4500 से €9100 प्रतिवर्ष, प्रति वयस्क रह सकती है।

रेखाचित्र E11

विषमता के वैश्विक गरीबी पर बहुत बड़े प्रभाव रहते हैं

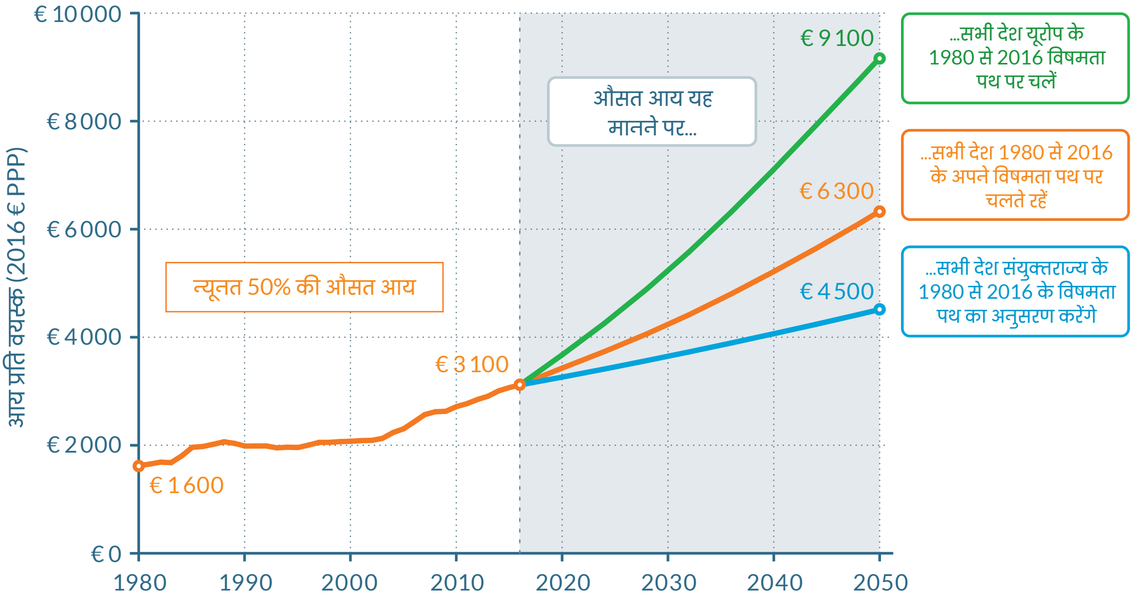

WID.world (2017). आंकड़ों के लिए देखें: wir2018.wid.world

यदि सभी देशों ने 1980 से 2016 के यूरोप के विषमता पथ का अनुसरण किया तो विश्व जनसंख्या के निम्नतम 50% की औसत आय 2050 तक बढ़कर € 9100 हो जाएंगे। आय के अनुमान क्रय समता तुल्य यूरो में हैं। यहां € 1 बराबर है $ 1.3 बराबर है ¥ 4.4। स्फीति से निवल ये आंकड़ें विभिन्न देशों में निर्वाह लागत का समंजन भी कर रहे हैं।

वैश्विक आय एवं संपदा विषमताओं का सामना (निवारण) करने के लिए राष्ट्रीय नीतियों और वैश्विक कराधान नीतियों में बड़े बदलाव आवश्यक है। शैक्षणिक नीतियां, निगम प्रशासन और मजदूरी निर्धारण की नीतियों की कितने ही देशों में पुनः समीक्षा होनी चाहिए। आंकड़ों में पारदर्शिता भी निर्णायक सिद्ध होगी।

शीर्ष स्तर पर वृद्धिशील आय और धन संपदा की विषमताओं का निवारण करने हेतु करों की प्रगतिशीलता एक प्रभावी उपाय सिद्ध हुई है।

▶ शोध यह स्पष्ट कर चुके हैं कि कर प्रगतिशीलता विषमता निवारण का एक प्रभावी उपाय है। प्रगतिशील कर केवल कर पश्चात विषमता को कम नहीं करते, वे शीर्ष अर्जकों की वेतन वृद्धि और धन संकलन हेतु उग्र सौदेबाजी को हतोत्साहित करते हैं और इस प्रकार संवृद्धि के अधिक उच्च अंश को हस्तगत करने की उनकी ललक को कम करते हुए कर-पूर्व विषमता का भी निवारण करते हैं। विश्व के अनेक धनी और उदीप्यमान देशों में 1970 के दशक से 2000 के दशक मध्यम तक प्रगतिशीलता में भारी कमी की गई है। वैसे 2008 के वित्तीय संकट के बाद से यह प्रगतिशीलता में कमी का क्रम शिथिल पड़ चुका है। कुछ देशों में तो यह पुनः उत्थान पर भी है, फिर भी भविष्य का घटनाक्रम अनिश्चित ही है और वह लोकतांत्रिक विचार-विमर्श पर ही निर्भर रहेगा। एक और बात ध्यान देने योग्य है: उच्च विषमताग्रस्त उदीप्यमान देशों में तो उत्तराधिकार कर नहीं के बराबर ही है। इससे इन देशों में महत्वपूर्ण कर सुधारों की संभावनाएं स्वयं ही उजागर हो जाती है।

वित्तीय परिसंपदाओं के स्वामित्व का रिकार्ड रखने वाला एक विश्व स्तरीय रजिस्टर बनाना कर वंचना, कालेधन को सफेद करना और विषमता वृद्धि पर करारा आघात सिद्ध होगा

▶ यद्यपि कर प्रणाली विषमता निवारण का एक निर्णायक उपाय होता है, फिर भी इसकी राह में अनेक बाधाएं आ सकती हैं। इनमें कर वंचना का स्थान बहुत ऊँचा है। ऐसा कुछ ही 'पैराडाइज पेपर' के मामले में उद्घाटित हुआ है। 'कर स्वर्ग' कहे जाने वाले देशों/क्षेत्रों में रखी गई धन संपदा में 1970 के दशक से बहुत वृद्धि हुई है, यह अब विश्व भर के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 10% तक पहुँच गई है। इन कर स्वर्गों के उदय से धन संपदा का मापन और उससे पूंजीगत आय पर कर रोपण आज के वैश्वीकृत संसार में कठिन हो गया है। भू-भवन संपदा के खाते तो सदियों से विद्यमान हैं किन्तु वे परिवारों की संपदा के एक बड़े भाग को नहीं दर्शा

पाते क्योंकि अब वह भाग तो वित्तीय निक्षेपों में लग रहा है। इस धोखाधड़ी से निपटने के लिए राष्ट्रीय कर अधिकारियों के प्रयोग के लिए वैश्विक वित्तीय रजिस्टर की रचना के लिए कई तकनीकी विकल्प आज विद्यमान हैं।

जनसंख्या के गरीबतर अर्द्धांश की रुद्ध आय वृद्धि की समस्या का समाधान शिक्षा तक अधिक समतापूर्ण पहुँच और अच्छे वेतन देने वाले रोजगार के सृजन में छिपा है।

▶ हाल ही में किए गए शोध दर्शा रहे हैं कि समान अवसरों पर जन संवाद-विमर्श और शिक्षा तक पहुँच विषमता की वास्तविकता के बीच एक बहुत बड़ी खाई विद्यमान है। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में ही जिनके अभिभावक न्यूनतम 10% आय वर्ग में है ऐसे 100 बच्चों में से मुश्किल से 20 से 30 महाविद्यालयी शिक्षा से लाभान्वित हो पा रहे हैं। लेकिन जब अभिभावक शीर्ष 10% अर्जक वर्ग में हों तो यह आंकड़ा 90% तक पहुँच जाता है। एक सकारात्मक पक्ष भी शोध से उभर कर आया है: गरीब परिवारों की संतान के लिए अपने द्वार अधिक खोलने वाले नामचिन्ह महाविद्यालयों को इस कार्य के कारण अपने कर्म निष्पादन में कोई समझौता नहीं करना पड़ता। धनी एवं उदीप्यमान, सभी देशों में शिक्षा तक पहुँच को समतापूर्ण बनाते और प्रवेश तथा वित्तीयन प्रणाली को बदलते समय पारदर्शी एवं सत्यापनीय लक्ष्य निर्धारित करने होंगे।

▶ शिक्षा तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने से बहुत कुछ पाया जा सकता है, किन्तु जब तक वर्तमान आय आवंटन के निम्नतम पायदान के व्यक्तियों की पहुँच उच्च वेतन वाले कार्यों तक नहीं होगी, शिक्षा अकेले ही विषमता की समस्या को सुलझा पाने में सफल नहीं होगी। श्रमिकों की निगम प्रशासकीय निकायों में बेहतर भागीदारी और अच्छी न्यूनतम मजदूरी दरें इस लक्ष्य की प्राप्ति के महत्वपूर्ण उपस्कर हैं।

सरकारों को आज की आय और धन संपदा की विषमता के स्तरों में वांछित सुधार लाने और उन्हें अधिक निकृष्टता की ओर अग्रसर बनाने रोकने के लिए समाज के भविष्य में निवेश करना होगा।

▶ शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्या संरक्षण हेतु सार्वजनिक निवेश अनिवार्य हो गया है। यही वर्तमान विषमताओं का मर्दन करेगा और इन्हें अधिक गहन होने से रोक पाएगा। किन्तु यह विशेष रुप से कठिन प्रतीत होने लगा है, क्योंकि धनी देशों की सरकारें तो गरीब ही नहीं हो गई हैं बल्कि ऋण के बोझ तले भी दबी हुई है। लोक ऋण को घटाना कोई सहज काम नहीं, किन्तु इसके लिए भी कई वैकल्पिक उपाय है- कराधान, ऋण से से राहत और मुद्रा स्फीति। वस्तुतः इतिहास काल में ऋण भार से दबी सरकारों ने अनेक बार इनका प्रयोग कर नई पीढ़ियों को सशक्तिकरण किया है।

WID.world

विश्व विषमता के आंकड़ों के स्रोत

175 मिलियन आंकड़ा बिन्दु

शत प्रतिशत निर्बंध अभिगम,
पारदर्शी, प्रतिकृति योग्य

आय की विषमताः
70 देशों की जानकारी सुलभ है

धन-संपदा विषमताः
30 देशों की जानकारी सुलभ है।

राष्ट्रीय आयः
180+ देशों की जानकारी सुलभ है

5 महाद्वीपों में 100 से अधिक शोधकर्ता उपस्थित हैं

वेबसाइट 3 बिलियन उपयोगकर्ताओं को उनकी अपनी-अपनी भाषाओं में उपलब्ध है : चीनी, इंगलिश, फ्रेंच, स्पेनिश

WID.WORLD

संपूर्ण वित्तीयन
सार्वजनिक एवं गैर लाभ प्रेरित निकायों द्वारा

रिपोर्ट के ऑन लाईन पाठान्तर के लिए देखें
WIR2018.WID.WORLD

WORLD INEQUALITY LAB

WID.WORLD